SPECIEL ISSUE OF SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES ISSN 2278-8808, SJIF 6.177

डॉ. सैय्यद मंजूर, कल्पना शर्मा (50-53)

आधुनिक रचनाकारों में महानगर और ग्राम विमश्ज्ञ

डॉ. सैय्यद मंजूर[१], कल्पना शर्मा[२]

[१]शोध–छात्र। उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगॉव। अध्ययन केंद्र–पु.ओ.नहाटा महाविद्यालय। भुसावल।

उत्ताराधुनिक अवधारणा ने 'विर्मश' को भी विमर्शीय बना दिया है। वास्तव में किसी विषय या अवधारणा के बहस, चर्चा और बातचीत के माध्यम से किसी अन्य अभिलक्षित सिध्दान्त या अवधारधा या विचारधारा तक पहुॅचने की प्रक्रिया को विर्मश कहॉ जा सकता है। विर्मश स्वयं कोई सिध्दान्त नही है, यह एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जो विमर्शित विषय को कई आयामों के माध्यम सें किसी अभिलक्षित लक्ष्य तक पहुॅचने का काय करती है। हिन्दी कथा साहित्य में समकालीन महिला लेखिकोने शहर और ग्रामीण परिवेश का चित्रण करते हुए आधुनिकता के ग्लोबलाईजेशन पर विचार प्रकट किये है। अधिकतर कहॉनियों में सामाजिक परिवेश के साथ–साथ सामाजिक संवेदनाओं को उद्घाटित किया है। परिवर्तन नैसर्गिक नियम है। उसके साथ–साथ नए उभरते साहित्यकारों ने अपने साहित्य में मानव संवेदनाओं को अपना मुख्य विषय बनाकर ग्लोबलाईजेशन के परिणामों को साहित्य में चित्रित किया है।

कहानी हिन्दी साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। वर्तमान साहित्य में प्रकाशित कहानियों से समकालीन हिन्दी कहानी की नब्ज को टटोला जा सकता है। सच तो यह है कि आज की कहानी में महानगर और ग्रामीण परिवेश का चित्रण दिखाई देता है। पुर्वकालिन कहानियो में बदलाव आता गया लेकिन आज की कहानी समाज का सही चित्रण करती है। सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक स्थितियों पर कहानी लिखी जा रही है! मानव कहानी का मुख्य केंद्र है। मानवीय संवेदनाओं के साथ–साथ महानगरीय बोध, ग्रामीण परिवेश, ग्रामीण और शहरी संस्कृति, ग्रामविर्मश आदि। सभी विषयों को संजाये हुए कहानी अपनी परिधि से आगे निकलकर समसामायिक प्रश्नो की अनुगूॅज है और जिवंत प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास कर रही है! अपनी इन विशेषताओं के कारण समकालीन हिन्दी कहानी निश्चित रूप से विगत् दशको में अपना स्थान स्थापित करेगी।

समकालीन हिन्दी साहित्य में महिला कथाकारों ने कहानी के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया है। कृष्णा सोबती, चित्रा मुद्गल, राजी सेठ, मंजुल भगत, नमिता सिंह, गीतांजलि श्री, मृणाल पांडे, क्षमा शर्मा, निरूपमा सेवती, नासिरा शर्मा, उषा प्रियंवदा इन जैसे कहानीकारों ने अपने प्रतिभा और

प्रतिमा के नुसार कथा–लेखन कर हिन्दी साहित्य को समृध्द बनाया है! इनके अधिकतर कहानियों मे जीवन–मूल्यों एवं युगीन समस्याओं को भी कहानी का विषय–वस्तु बनाया गया है! साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, भ्रष्टाचार और राजनीतिक गिरावट को समकालीन कहानियों में प्रमुखता से चित्रित किया गया है! अधिकतर कहानीकारों ने महानगरीय जीवन से उत्पन्न तनावों एवं स्त्री–पुरूष के सम्बन्धों में आए परिवर्तनों और तनावों को भी चित्रित किया गया है।

वर्तमान समय में कहानियों की रचना तो पर्याप्त संख्या में हो रही है किन्तु इनमें से कालजयी कहानी तो गिनी–चुनी ही है। अच्छी कहानी ही कालंजयी है हो सकती है, जो अपने को दोबारा पढे जाने को विवश कर दें।

रचनाकारों के कहानियों में महानगरीय और ग्राम–विर्मश चित्रणः–

राजी सेठ की कहानी 'नगर रसायन' में महानगरीय जीवन की समस्याओं का चित्रण वास्तविकता के साथ किया गया है। कहानी की नायीका खीज उठती है। वह उसे पति के प्रवासी होने, तथा घर में नौकरो के न टिकने, परिवार में आर्थिक तंगी के विषय में बता रही है। "गाडी का पेट्रोल..... दूध का बील..... आटे का टिन इन दिने में खड़खड़ाने लगना..... सब्जी की कीमतें.... . पानी की दिक्कत..... खाटों की दिक्कत..... बिस्तरों की खींचतान..... काम की अधिकता से नौकरो का रातोरात चुपचाप भाग खड़े होना।" आज की बढती हुई महगाई और भौतिक सुख की अदम्य इच्छाए उसके जीवन को विषतर बना रही है। लेखिका ने इस कहानी में महानगर की जीवनशैली को वास्तविकता के साथ उद्घाटित किया है।

'संक्रमण' कहानी निरूपमा सेवती की कहानी है। इस कहानी में आधुनिक नारी का रूप दिखाई देता है। बड़े घर की बेटी जब बहू बनकर गरीब घर में आयी तो उसका बर्ताव कैसा है। इसका चित्रण लेखिका ने किया है। भारतीय समाज में पैसेवाले घर सें आयी हुई बहू का यह रूप हर जगह दिखाई देता है। "लेकिन पत्नी ने बड़ी होशियारी सें दहेज का सारा सामान अपनें ही अधिकार में रखा था। वह शायद ठान कर आई थी कि अगर इतने बड़े परिवार का ज्यादा झंझट हुआ तो वह जल्दी ही अलग हो जायेगी।"[२] आधुनिक नारी कभी–भी एकत्रित परिवार पसंद नही करती। कहानी में महानगरीय बोध का उदघ्टित करते हुए आधुनिक नारी रूप को चित्रीत किया गया है।

नसिरा शर्मा की कहानी 'विरासत' में आधुनिकीकरण और बढते शहरीकरण की प्रवृत्ति के कारण परिवार में विघटन होता है। इसका मार्मिक चित्रण लेखिका ने किया है। कहानी का पात्र पुल्लन मियॉ के दोनो बेटे शहर में स्थायी हो जाते है। उनका बड़ा पुत्र फारूख का शव गॉव लाया जाता है। पुल्लन मियॉ अपनी पत्नी के साथ बेटे की कब्र पर जाते है। उन्हे लगता है, मानों उनका बेटा शहर सें गॉव लौट आया है। लेखिका ने इस कहानी के माध्यम सें नगर और गॉव दोनो का

चित्रण किया है। 'अपराधी' कहानी में रिटायर पुलीस अधिकारी राम मनोहर त्यागी अपने गॉव मे इसकी अनुभूति लेता है। "गॉव में सप्ताह भर रहने के बाद राम मनोहर को लगने लगा था कि यह जगह भी अब रहने लायक नहीं रह गई है। सब कुछ बदल रहा है, बल्कि बॅट रहा है। खाना–पीना तो कभी साथ न था, मगर काम–धंदा साथ था। मौत–बिमारी साथ थी। एक के दुख पर दूसरा काका, चाचा कहता दौड़ता था, मगर अब कोई किसी को जैसे पहचानता ही नहीं। यह कौन–सी हवा चल पड़ी है, जो सबका मन बदल रही है।"[३]

उषा प्रियंवदा की कहानी 'वापसी' में गजाधर बाबू के अकेलेपन को चित्रित किया गया है। अपने ही परिवार में गजाधर बाबू रिटायर होने के बाद अकेले हो गये। उन्हे लगा की पत्नी साथ देगी लेकिन पत्नी ने भी रिटायर गजाधर बाबू को नही समझा। वे पत्नी को समझाने लगे कि अब पेंन्शन से पैसा कम आयेगा तो खर्च कम होना चाहिए। तब पत्नी ने सहानुभूति बताने के बजाए कहा की "सभी खर्च तो वाजीब–वाजीब हैं किस का पेट काटूँ ? यही जोड़–गॉठ करते–करते बूढी हो गयी, न मन का पहनना, न ओढना।"

गीतांजलि श्री की कहानी 'जड़े' में एक गॉव के प्रात:काल का वर्णन दिया गया है। सामान्यत: किसी कस्बे में सुबह इसी प्रकार दृष्य दृष्टिगत होता है। "चिड़ियों ने चहकना शुरू किया तो सब्जीवाले की लारी के पहियो से सड़क की ककड़ी खड़खड़ाने लगी। पड़ोस की लडकी अपने टूटें पैर पर लॅगडती ऑफिस के लिए चली तो पत्तों पर धूप–छॉव ने हिलना–फिसलना शुरू कर दिया। सब अपने–अपने वक्त से कुछ इतने सहज चले कि वहम् हो पड़ा–टूटा पैर भी सहज, उगता, सूरज भी सहज।"[५]

'यहॉ हाथी रहते थे' गीतांजलि श्री की इस कहानी में शहर बसने के पूर्व जो गॉव था उसका वर्णन है। महानगर और ग्रामीण विर्मेश को यह कहानी चित्रीत करती है। इसका वर्णनात्मक शैली में शहर और गॉव का चित्र इस प्रकार सें है "किसी को खास कुछ याद नहीं, इस शहर में, किसी के बारे में कि कभी नदी के आर–पार गॉव थे और खेत और हाथी भी और पुल पर लिखा हुआ था 'यहा हाथी रहते है' और नर्म ताजी सब्जी खेत से हाट में लायी जाती थी। जो नदी किनारे लगता और कभी तो आते–आते लोग रूक लेते। सामने तुड़वाते कुछ खरीदते कुछ चबाते, टोकरी में डलवा लेते और बच्चे हाथियों को और सूँड से फब्बारे उछालते देख लेते और शादी–ब्याह के लिए जनता बोर्ड पढ़े कि 'यहॉ हाथी रहते है' महावत से सौदा तय करने पुल के नीचे उतर आती। यह सारी बातें, किस्से किवदंती की तरह भी, याद नही, समझिए।"६

सांकेतिक अर्थवत्ता से युक्त आज की कहानी महानगरीय बोध और ग्राम–विमर्श के गहरे स्तरों को छूने में समर्थ है। राजीसेठ, निरूपमा सेवती, नासिरा शर्मा, उषा प्रियंवदा और गीतांजलि श्री के कहानियों मे समसामायिक यथार्थ से जुडी है।

निष्कर्षत:

समकालीन हिन्दी कहानी आम आदमी की कहानी है। उसमें समसामायिक प्रश्नो की अनुगूँज है और जीवन्त प्रश्नो के उत्तर खोजने का प्रयास भी है। रचनाकारों की कहानियों में शहर और गॉव में जो आधुनिकीकरण से बदलाव हो रहा है इसका यर्थाथ चित्रांकन है। अपनी इन विशेषताओं के कारण समकालीन हिन्दी कहानी निश्चित रूप से विगत नौ दशकों की हिन्दी कथा यात्रा की विकास यात्रा बन गई है।

संदर्भ सूची

नगर रसायन	—	*राजी सेठ*	—	*पृ. १०८*
संक्रमण	—	*निरूपमा सेवती*	—	*पृ. ३२*
दुतखाना	—	*नासिरा शर्मा*	—	*पृ. ४९*
वापसी	—	*उषा प्रियंवदा*	—	*पृ. १२३*
वैराग्य	—	*गीतांजलि श्री*	—	*पृ. ८७*
यहॉ हाथी रहते थे	—	*गीतांजलि श्री*	—	*पृ. १६*